III

(Achievements of New Economic Policy)

रूस की अर्थव्यवस्था पर नवीन आर्थिक नीति का बड़ा ही अनुकूल प्रभाव पड़ा। प्रति व्यक्ति आय में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। प्रति व्यक्ति आय जो 1921 ई० में 39 रूबल से बढ़कर 1925 ई० में 100 रूबल हो गयी। इस प्रकार चार वर्षों में राष्ट्रीय आय में प्रायः 150 प्रतिशत की वृद्धि हो गयी।

रूस की अर्थव्यवस्था पर नवीन आर्थिक नीति का विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा जो निम्नांकित रूप में दर्शाये गए हैं:—

कृषि :— नवीन आर्थिक नीति के अन्तर्गत खाद्यान्नों के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि नहीं हुई। गेहूँ, जौ, और मकई जैसी मुख्य फसलों का उत्पादन 1913 ई० के स्तर से बहुत ही कम रहा। किन्तु अन्य फसल जैसे- कपास, चुकन्दर, तम्बाकू तथा सन इत्यादि औद्योगिक फसलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। सबसे महत्वपूर्ण वृद्धि पशुधन में हुई। अतः हम कह सकते हैं कि कृषि क्षेत्र में नवीन आर्थिक नीति में बहुत कम विकास हुआ। 1913 ई० कृषि मजदूर की वार्षिक आय की तुलना में

एक औद्योगिक मजदूर की वार्षिक आय की तुलना में केवल 35 प्रतिशत थी। यह सम्बंध 100: 35 से बढ़कर 1927-28 ई० में 100: 25 हो गया। नवीन आर्थिक नीति से मुख्यतः औद्योगिक मजदूर ही लाभान्वित हुए।

परिवहन :-

परिवहन के क्षेत्र में इस नीति से रूस को सबसे अधिक लाभ हुआ। गृह-युद्धों में रेलों की स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई थी। 1913 ई० में रूसी रेलवे की कुल लम्बाई 58.545 किलोमीटर थी। 1918 ई० में यह केवल 17,500 किलोमीटर लम्बी रह गयी थी। गृह-युद्ध से लगभग 4332 रेलवे पुल नष्ट हो गये थे तथा अनेक कारखानों, इमारतों को क्षति पहुँची थी। नवीन आर्थिक नीति के अन्तर्गत न केवल क्षति की ही पूर्ति हुई वरन् नया निर्माण कार्य भी हाथ में लिया गया। परिणामस्वरूप रेलों की लम्बाई बढ़कर 1928 ई० तक 76,800 किलोमीटर हो गयी। डाक तार के क्षेत्र में भी पर्याप्त विकास हुआ।

विदेशी व्यापार :-

नवीन आर्थिक नीति के अन्तर विदेशी व्यापार में भी पर्याप्त वृद्धि

हुई। 1919 ई० में रूसी निर्यात केवल 15 लाख रूबल का ही रह गया था। यह बढ़कर 1921 ई० में 232 लाख रूबल, 1922 ई० में 816 लाख रूबल, 1923 ई० में 2050 लाख रूबल तथा 1924 ई० में 7095 लाख रूबल हो गया। आयातों में भी इसी प्रकार वृद्धि हुई। 1933 ई० तक रूसी आयात युद्ध के पूर्व स्तर का 85 प्रतिशत हो गया। 1926 ई० तक रूसी आयात ने पुनः युद्ध के पूर्व की स्थिति प्राप्त कर ली।

उद्योग :—

इस काल में औद्योगिक उत्पादन में भी वृद्धि हुई। परन्तु अनेक कारणों से यह प्रगति आशाजनक नहीं हो पायी। इसका प्रमुख कारण उद्योगों के लिए रुकावटें था। जैसे— अधिकांश कारखानों के यंत्र पुराने पड़ गए थे, पूँजी का अभाव था, कच्चे माल को प्राप्त करने में कठिनाई थी, औद्योगिक कुशलता का ह्रास था, औद्योगिक श्रम की मनोवैज्ञानिक स्थिति उत्साहजनक नहीं थी। फिर भी इन कठिनाइयों के बावजूद औद्योगिक उत्पादन में पर्याप्त प्रगति हुई। किन्तु औद्योगिक उत्पादन के गुण और किस्म में अवनति होती चली गयी। उत्पादन बढ़ाने पर इतना अधिक जोर दिया गया

कि किल्म के नियंत्रण पर से ध्यान ही हट गया। दूसरी बात की उत्पादन की ऊँची लागत। इनके लिए अनुभवहीन प्रबंध, मजदूरी के अत्यधिक वेतन और उद्योग के क्षेत्र में एकाधिकार आदि कारण उत्तरदायी थे।